बपतिस्मा व उद्धार

मरकुस 16:16 और 1 पतरस 3:21 दो आयतें हैं जो स्पष्ट करती हैं कि बपतिस्मे और उद्धार में सीधा सज़्बन्ध है। आइए इन दो आयतों को सावधानीपूर्वक पढ़ें ताकि हम इस सज़्बन्ध को और अच्छी तरह से समझ सकें।

मरकुस 16:16 में उद्धार से बपतिस्मे को कैसे जोड़ा गया है?

यीशु ने बपतिस्मे को उद्धार से अर्थात उद्धार पाने के एक साधन के रूप में नहीं बल्कि उद्धार पाने की एक शर्त के रूप में जोड़ा है। अंग्रेज़ी की NASB बाइबल में मरकुस 16:16 का अनुवाद ठीक ही किया गया है: ''जिसने विश्वास किया और बपतिस्मा लिया है उसी का उद्धार होगा; परन्तु जिसने अविश्वास नहीं किया है वह दोषी ठहराया जाएगा।''

मरकुस 16:16 की प्रामाणिकता

कुछ लोग इस आयत की प्रामाणिकता पर भी प्रश्न उठाते हैं ज़्योंकि यह मरकुस की पुस्तक के अंत के उस लज़्बे अंश का एक भाग है (16:9-20) जो कुछ प्राचीन पांडुलिपियों में नहीं मिलता है। यह भाग नये नियम की दो सबसे पुरानी सज़्पूर्ण पांडुलिपियों, चौथी शताज़्दी के द वेटिकनुस (कोडेज़्स बी) और सिनेटिकुस (कोडेज़्स अलफ़) में नहीं मिलती है। वेटिकनुस में, *kata Markon* (''मरकुस के अनुसार'') आयत 8 के बाद आता है, परन्तु एक विद्वान ने यह विचार किया है कि ''यह सुझाव देते हुए कि B की नकल करने वाले को अंत का पता तो था परन्तु जिस पांडुलिपि की वह नकल कर रहा था उसमें वह नहीं था, अगला कॉलम खाली छोड़ा गया है ...।''[1]

चौथी शताज़्दी की इन पांडुलिपियों से पहले इसके अंत में अधिक आयतें होती थीं। इसके अन्तिम भाग के पुराने होने पर कोई प्रश्न नहीं उठाया जा सकता। ''स्पष्टत: टेटियन (लगभग 170 ई.) को 'अंत में अधिक आयतें' (जो [KJV] में छपा है) को मालूम था और बहुत सी [पांडुलिपियों] में मिलता है।''[2]

इरेनियुस (130-200 ई.) ने भी इसे उद्धृत किया है; डायाटेसरन में; कोडिसस अलग्ज़ेन्ड्रिनस, इफ़्राइमी और बेज़े, पांचवीं शताज़्दी की पांडुलिपियों में और चौथी शताज़्दी के एक पुराने सीरियाई संस्करण में मिलता है जिसके लेख को दूसरी शताज़्दी के अंत का माना जाता है। कुछ लोग मानते हैं कि जस्टिन मार्टिर (100-167) ने अपनी अपोलॉजी में लज़्बी समाप्ति वाले भाग से ही उद्धृत किया था (1.45)। लज़्बे अंत वाले भाग से अन्य

प्रारंभिक संकेत या उद्धहरण हिपोलुटिस (170?–235), अफ़रातस, द गॉस्पल ऑफ़ निकुदेमुस, अज़्बरोस (337–397), एपिफेनियुस, क्रिसोस्टोम (345–407) और अगस्टिन (354–430) के काम में मिलता है।

दूसरी ओर, कलीसिया के एक इतिहासकार, यूसबियुस (264 ई–340) ने लिखा है कि बहुत सी पांडुलिपियों में लज़्बे वाला भाग नहीं था,[3] जिसकी पुष्टि इस तथ्य से होती है कि यह भाग कई पांडुलिपियों में नहीं मिलता है। ओरिगिन (185–254), ज़्लेमेंट ऑफ़ अलेग्ज़ेंडर (?–215), टरटुलियन (160–220) और अन्य लोगों को इसका ज्ञान न होने की बात कही जाती है; परन्तु तथ्य यह है कि उनके द्वारा इन आयतों को उद्धृत न करने से यह सिद्ध नहीं होता कि उन्हें इसका अहसास नहीं था कि वे थीं या उन्होंने इसे मरकुस की पुस्तक का अंत नहीं माना।

अन्य विचार जो इस कार्य के लिए बहुत ही व्यापक रूप में हैं, मरकुस के लिखने की आपज़ियों को शामिल करते हैं। कुछ लोगों का मानना है कि मरकुस 16:9–20 को सुसमाचार के वृज़ांत में शामिल नहीं करना चाहिए ज़्योंकि इन आयतों के शज़्द ''किसी निश्चित शज़्दावली की विशेषताओं, शैली और थियोलोजिक सामग्री दिखाते हैं मरकुस की बाकी पुस्तक की तरह नहीं हैं।''[4]

इन आयतों की प्रामाणिकता पर बहस खत्म नहीं हो सकती और हो सकता है कि निर्णायक रूप से इसका कभी हल भी न हो सके ज़्योंकि इनमें बाइबल की दूसरी शिक्षा से कोई टकराव नहीं है, ज़्योंकि लोग उन्हें मसीहियत के प्रारंभिक दिनों से जानते थे व मानते थे और सज़्ज़वत: वे मरकुस की पुस्तक का अंतिम भाग थीं, इसलिए इनका अन्य आयतों के साथ अध्ययन स्वीकार करना चाहिए।

मरकुस 16:16 की समझ

मरकुस 16:16 में ''विश्वास करे'' और ''बपतिस्मा ले'' दोनों ही अनिश्चित भूतकाल कृदंत हैं। अनिश्चित भूतकाल कृदंत का कार्य हमेशा मुज़्य क्रिया के कार्य से पहले होता है, जिसका अर्थ ''विश्वास किया'' और ''बपतिस्मा लिया'' है। मुज़्य क्रिया ''उद्धार पाएगा'' से पहले पूरी होनी चाहिए।

इंटरलीनियर भाग में, *द न्यू ग्रीक इंग्लिश इंटरलीनियर न्यू टैस्टामेंट,* भी इस आयत का अनुवाद करके यूनानी क्रियाओं के ज़ोर को बाहर लाता है, ''विश्वास करके बपतिस्मा लेने वाले का उद्धार होगा।''[5] इस आयत में यीशु ने ''विश्वास किया है'' और ''बपतिस्मा लिया है'' उद्धार को दोनों के बाद रखा। यीशु ''अपने सब आज्ञा मानने वालों के लिए सदाकाल के उद्धार का कारण'' है (इब्रानियों 5:9)। यदि हम उद्धार पाना चाहते हैं, तो हमारे लिए सुसमाचार पर विश्वास करके बपतिस्मा लेना आवश्यक है।

1 पतरस 3:21 में बपतिस्मे को उद्धार से कैसे जोड़ा गया है?

पतरस, जिसने मरकुस 16:16 में यीशु की बात सुनी थी, ने वही सच्चाई सिखाई। ''जहाज़ ... जिसमें बैठकर थोड़े लोग अर्थात आठ प्राणी पानी के द्वारा बच गए'' (1 पतरस 3:20) की बात करने के बाद उसने लिखा: ''और उसी पानी का दृष्टांत भी,

अर्थात बपतिस्मा यीशु मसीह के जी उठने के द्वारा अब तुझ़ें बचाता है; (उससे शरीर के मैल को दूर करने का अर्थ नहीं है परन्तु शुद्ध विवेक से परमेश्वर के वश में हो जाने का अर्थ है)'' (1 पतरस 3:21)।

कई कारणों से बहुत से लोग दावा करते हैं कि यह आयत उद्धार के लिए एक शर्त के रूप में बपतिस्मे की शिक्षा नहीं देती। (1) उनका मानना है कि नूह का परिवार ''पानी से'' बचाया गया था ''पानी के द्वारा'' नहीं। (2) वे कहते हैं कि इस आयत में बपतिस्मे को ''दृष्टांत'' कहा गया है। (3) उनका मानना है कि यह आयत सिखाती है कि ''शरीर के मैल को दूर करने'' का अर्थ पाप धोना है।

(कारण 1) के साथ समस्या यह है कि इस आयत में कहा गया है कि वे जहाज़ में पानी ''के द्वारा'' (यू.: *dia*) बचाए गए थे, न कि पानी ''से।'' जहाज़ ने उन्हें केवल इसलिए बचाया ज़्योंकि परमेश्वर ने पानी भेजा था। यदि परमेश्वर आग भेजता, तो जहाज़ में उनका बचाव नहीं हो सकता था, बल्कि वे जलकर मर जाते। वे जहाज़ में पानी ''के द्वारा'' बचाए गए थे। इसकी तुलना उस पानी से की जा सकती है जिसने मिसर की सेना से इस्राएल के लोगों को बचा लिया था और मिसरियों का नाश कर दिया था। (निर्गमन 14:13,27 -30)।

(कारण 2) के साथ समस्या यह है कि ''दृष्टांत'' यूनानी शज़्द *antitupon* का अनुवाद है जिसका अर्थ ''प्रतिरूप'' है। जहाज़ में नूह और उसके परिवार का उद्धार हमारे उद्धार का एक नमूना (दृष्टांत) है जो कि प्रतिरूप (वास्तविकता) है। बपतिस्मा वास्तविकता अर्थात प्रतिरूप है, जिसका रूप जहाज़ में उनका बचाया जाना है। बपतिस्मा अब हमें बचाता है ज़्योंकि इसके द्वारा हम पाप से बचकर सुरक्षित स्थान पर पहुंचते हैं, जैसे जहाज़ के लोग मृत्यु से बचे थे।

(कारण 3) के साथ समस्या यह है कि इससे स्वयं पतरस यह कहकर कि बपतिस्मा अब हमें बचाता है परन्तु शरीर के पाप को नहीं मिटाता अपनी ही बातों का विरोध करता प्रतीत होता है। इस वाज़्य को समझने का अधिक स्वाभाविक ढंग यह है कि इस तथ्य को स्पष्ट करने की इच्छा से पतरस ने बपतिस्मे को उद्धार से जोड़ा। उसने कहा कि बपतिस्मे का उद्देश्य शरीर के बाहरी भाग को धोना नहीं, बल्कि पापों की क्षमा में पाये जाने वाले शुद्ध विवेक के लिए परमेश्वर के सामने हमारी बिनती है।

पाद टिप्पणियां

[1]रौबर्ट जी. ब्रेचर और यूजीन ए. नाइडा, *ए ट्रांसलेटर'स हैंडबुक ऑन द गॉस्पल ऑफ़ मार्क* (न्यू यॉर्क: यूनाइटेड बाइबल सोसायटीज़, 1961), 517. [2]राल्फ पी. मार्टिन, *इन्टरनेशनल स्टेंडर्ड बाइबल इन्साइज़्लोपीडिया,* सं. ज्योफरी डज़्ल्यू. ब्रोमिले (ग्रैंड रैपिड्स, मिशी.: Wm. B. ईर्डमैंस पज़्लिशिंग कं., 1986), 236. [3]*Questiones ad Marinum 1.* [4]कैनथ बेकर, सं. नोट्स ऑन मार्क, द NIV स्टडी बाइबल (ग्रैंड रैपिड्स, मिशी.: ज़ोन्डर्वन, 1995), 1528. [5]जे. डी. डगलस, सं., *द न्यू ग्रीक इंग्लिश इन्टरलीनियर न्यू टैस्टामेंट,* अनु. रोबर्ट के. ब्राऊन एण्ड फिलिप डज़्ल्यू. कंफर्ट (व्हीटन, 3: टिंडेल हाउस पज़्लिशर्स, 1993), 192.

उद्धार के लिए परमेश्वर की योजना में जल

जल जीवन के लिए आवश्यक है। वैज्ञानिक मानते हैं कि जल के बिना पृथ्वी पर जीवन नहीं हो सकता था। परमेश्वर ने अपने उद्देश्यों को पूरा करने के लिए जल को कई बातों में चुना है। परमेश्वर द्वारा सृष्टि की रचना में ''पृथ्वी भी जल में से बनी और जल में स्थिर है'' (2 पतरस 3:5)। पृथ्वी पर जीवन जल में से बनाने के बाद ही सम्भव हो सका था। जल में जीवन है (उत्पत्ति 2:6) तथा इससे पृथ्वी पर भौतिक जीवन के सभी रूप जीवित रहते हैं।

नूह को जल के द्वारा ही सुरक्षित जगह में पहुंचाया गया था (1 पतरस 3:20)। नूह द्वारा जहाज़ बनाने के बाद, नूह और उसके परिवार को सुरक्षित रखने और विनाश से निकालने के लिए ले जाने के लिए जल आवश्यक था। यदि परमेश्वर इसकी जगह आग भेज देता तो वे भी आग में भस्म हो जाते। परमेश्वर द्वारा जल प्रलय भेजने के समय जहाज़ में मानवीय जीवन को बचाए रखने के लिए जल आवश्यक था।

इस्राएल की संतान मिसरियों की सेना से बच निकलने के समय सुरक्षित जगह पर जल में से ही निकली थी। जल से फिरौन की सेना का नाश हो गया था (निर्गमन 14:26-29)। निर्गमन 14:30क में हम पढ़ते हैं, ''और यहोवा ने उस दिन इस्राएलियों को मिसरियों के वश से इस प्रकार छुड़ाया।'' बाद में पौलुस ने लिखा, कि ''सबने बादल में, और समुद्र में मूसा का बपतिस्मा लिया'' (1 कुरिन्थियों 10:2)। इस आयत से कुछ लोग बहस करते हैं कि बपतिस्मा जल छिड़कने से होता है। वे यह मानकर चलते हैं कि जब इस्राएली समुद्र में से निकल रहे थे तो बादल में से उन पर जल छिड़का गया था। यदि ऐसा होता, तो इस्राएली ''स्थल ही स्थल पर होकर'' न चलते (निर्गमन 14:22)। सच्चाई यह है कि परमेश्वर द्वारा इस्राएलियों के लिए उपलब्ध करवाया बादल पानी का नहीं बल्कि धुएं का बादल था। यह ''दिन को तो धुएं का बादल, और रात को धधकती आग का प्रकाश'' था (यशायाह 4:5)।

बाद में इस्राएली प्रतिज्ञा किए हुए देश में जाने के लिए पानी में से निकले थे (यहोशू 3:14-17)। जल में से निकलकर, लोगों ने उन आशिषों को पाया जिनकी प्रतिज्ञा परमेश्वर ने उन्हें दी थी।

नामान को कोढ़ से शुद्ध होने के लिए जल में जाना आवश्यक था (2 राजा 5:1-14)। यीशु के पास आने वाले अंधे को चंगा करने के लिए जल का ही इस्तेमाल किया गया था (यूहन्ना 9:6,7)।

यहां तक कि स्वर्गीय जीवन भी परमेश्वर के सिंहासन से बहने वाली जल की नदी के द्वारा दिखाया गया है (प्रकाशितवाक्य 22:1)। परमेश्वर की बहुत सी आशिषें जिनमें जीवन भी शामिल है, जल के द्वारा ही आती हैं। शायद कि यह संयोग नहीं है कि परमेश्वर ने यीशु के द्वारा उद्धार की इच्छा करने वालों के लिए पानी को आवश्यक वस्तु के रूप में चुना (1 पतरस 3:21)। तुलनात्मक अर्थ में भौतिक जीवन लहू पर निर्भर है (उत्पत्ति 9:4) और आत्मिक जीवन यीशु के लहू पर (इब्रानियों 9:22), उसी प्रकार भौतिक जीवन के लिए और मसीह में नये आत्मिक जीवन के लिए भी जल आवश्यक है (रोमियों 6:4)।